

वर्तनी-व्यवस्था

शब्द में प्रयुक्त वर्णों की सही क्रमिकता को वर्तनी कहते हैं। वर्तनी के प्रयोग की शुद्धता केवल शब्द स्तर पर ही नहीं अपितु वाक्य, अनुच्छेद स्तर तक आवश्यक है। इसलिए वर्तनी-व्यवस्था को इन तीनों स्तरों पर समझना होता है। विराम-चिह्न वर्तनी-व्यवस्था के ही अंग हैं। अतः वर्तनी व्यवस्था को निम्नलिखित बिंदुओं के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है।

वर्ण स्तर पर

वर्तनी में वर्ण स्तर पर स्वर-व्यंजन, मात्राओं और संयुक्त व्यंजन के लेखन की चर्चा अपेक्षित है। हिंदी वर्णमाला के मानक रूप की चर्चा पहले की जा चुकी है। मात्रा-संयोजन और संयुक्त व्यंजन बनाने की दृष्टि से सभी वर्णों को चार कोटियों में बाँटा जा सकता है।

1. खड़ी पाई वाले वर्ण

वे वर्ण जिनके अंत में खड़ी पाई होती है: जैसे- ख, ग, घ, ज, झ, ण, त, थ, ध, न, प, ब, भ, म, य, ल, व, श, ष, स। इन वर्णों में मात्रा का संयोजन खड़ी पाई के साथ ही होता है, जैसे-गेंद, तू। जब इनका संयोजन किसी अन्य व्यंजन के साथ करना हो तो खड़ी पाई को हटा दिया जाता है और उसके साथ परवर्ती वर्ण को जोड़ दिया जाता है। जैसे-ख्याति, ग्वाला, शब्द।

2. मध्य में खड़ी पाई वाले वर्ण

वे वर्ण जिनके मध्य में खड़ी पाई होती है, जैसे - क, फ, फ़। इन वर्णों पर मात्रा बीच की खड़ी पाई पर लगाई जाती है और इन वर्णों को मिलाकर लिखते समय खड़ी पाई के बाद आने वाले अंश के झुकाव को हटाकर उसे परवर्ती वर्ण के साथ जोड़ दिया जाता है, जैसे- पक्का, रफ़्तार, फ़्लू।

3. छोटी खड़ी पाई वाले वर्ण

कुछ वर्णों में खड़ी पाई बहुत छोटी होती है और उसके नीचे कुछ गोलाकार रूप होता है: जैसे- छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ह। जब इन वर्णों का परवर्ती व्यंजन के साथ संयोजन करना होता है तो इन व्यंजनों के नीचे हलंत का निशान लगा दिया जाता है: जैसे- उच्छ्वास, मिट्टी,

गड्ढा, दददा, चिह्न। यद्यपि $द् + य = द्य$, $द् + व = द्व + ह् + न = ह्न$, $ह् + म = ह्य$ आदि पारंपरिक रूप प्रचलित हैं परंतु लेखन में एकरूपता और स्पष्टता की दृष्टि से इन्हें हलंत चिह्न के साथ लिखना ही उचित है।

4. विशिष्ट वर्ण

(क) र - मात्रा संयोजन और संयुक्ताक्षर बनाने में 'र' की विशिष्ट स्थिति होती है। 'र' में उ, और ऊ की मात्रा वर्ण के बीच में लगती है ; जैसे- $र + उ = रु$, $र + ऊ = रू$ । 'र' के साथ व्यंजन संयोजन की दो निम्नलिखित स्थितियाँ हो सकती हैं-

1. स्वर रहित र् + व्यंजन
2. स्वर सहित र + व्यंजन

स्वर रहित 'र्' के साथ जब किसी स्वर सहित व्यंजन का संयोजन किया जाता है तो 'र' परवर्ती व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है: जैसे $ध + र् + म = धर्म$, $अ + र् + थ = अर्थ$ ।

स्वर रहित व्यंजन + स्वर सहित र - जब कोई स्वर रहित व्यंजन 'र' वर्ण के साथ जुड़ता है तो स्वर रहित व्यंजन का रूप नहीं बदलता और 'र' अपना रूप बदलकर पूर्ववर्ती व्यंजन की खड़ी पाई के नीचे जुड़ जाता है: जैसे- $क् + र + म = क्रम$, $भ् + र + म = भ्रम$, $त् + र + स्त = त्रस्त$, $श् + र + म = श्रम$ ।

(ख) क्ष और ज्ञ - ये क्रमशः $क् + ष$ और $ज् + ज$ के परंपरागत संयुक्त रूप हैं और इसी रूप में मानक वर्तनी में स्वीकृत हैं। ध्यान दीजिए कि $ज् + ज = ज्यँ = ज्ञ$ का उच्चारण हिंदी में सामान्यतः 'ग्य' होता है।

शब्द स्तर पर

(क) शिरोरेखा - वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं। लेखन के स्तर पर किसी भी शब्द की सीमा का निर्धारण उसकी शिरोरेखा से होता है। इसके अतिरिक्त एक ही शब्द के वर्णों में समान दूरी रखी जाती है। सामासिक शब्दों में जब दोनों पदों को एक शिरोरेखा के अंतर्गत लाना व्यावहारिक नहीं होता तो समास के पदों के बीच योजक चिह्न (-) का प्रयोग होता है; जैसे -माता-पिता, भाई-बहन। इसी तरह पुनरुक्त और युग्म शब्दों के बीच में भी योजक चिह्न का प्रयोग होता है जैसे- घर-घर, धीरे-धीरे सुख-दुःख।

(ख) अनुस्वार - हिंदी में अनुस्वार नासिक्य व्यंजन ध्वनि है, जिसके उच्चारण के स्तर पर अनेक रूप उपलब्ध होते हैं, परंतु लेखन के स्तर पर इन विभिन्न रूपों को व्यक्त करने के लिए अनुस्वार चिह्न (ँ) प्रयुक्त होता है जो व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के नासिक्य व्यंजन को अभिव्यक्त करता है। अनुस्वार शब्द का अर्थ है स्वर के बाद आने वाला अर्थात् अनु +

स्वर। अतः यह शब्द के मध्य और अंत में ही आ सकता है, आदि में नहीं। शब्द के मध्य में अनुस्वार अपने परवर्ती व्यंजन के वर्ग के नासिक्य व्यंजन अर्थात् पंचमाक्षर का प्रतिनिधित्व करता है; जैसे-

- | | |
|---|----|
| 1. क वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | ङ् |
| 2. च वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | ञ् |
| 3. ट वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | ण् |
| 4. त वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | न् |
| 5. प वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | म् |

उक्त सभी स्थितियों में नासिक्य व्यंजन अर्थात् पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ँ) का प्रयोग होता है न कि पंचमाक्षर का: जैसे -

गंगा, पंकज (गङ्गा, पङ्कज)

मंच, कुंज (मञ्च, कुञ्ज)

कुंठा, खंड (कुण्ठा, खण्ड)

दंत, बंद (दन्त, बन्द)

चंपक, अंब (चम्पक, अम्ब)

6. जब कोई पंचमाक्षर दूसरे पंचमाक्षर के साथ संयुक्त होता है तो पहला पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में नहीं बदलता अपितु पंचमाक्षर रूप में ही संयुक्त होता है: जैसे - वाङ्मय, अन्न, सम्मेलन, मृण्मय, उन्मुख, अक्षुण्ण।
7. यदि पंचमाक्षर य, व, ह के पहले आता है तो वहाँ वही पंचमाक्षर लिखा जाता है, अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता है: जैसे - पुण्य, अन्य, समन्वय, कन्हैया, तुम्हारा।
8. श, ष, स, ह के पूर्व केवल अनुस्वार का ही प्रयोग होता है, पंचमाक्षर का नहीं: जैसे- अंश, वंश, हंस, कंस, संहार आदि।
9. सम् उपसर्ग के बाद जो शब्द अंतःस्थ या ऊष्म वर्णों से प्रारंभ होते हैं तो 'म्' निश्चित रूप से अनुस्वार हो जाता है: जैसे - सम् + यंत्र = संयंत्र, सम् + रचना = संरचना, सम् + लाप = संलाप, सम् + वाद = संवाद।

(ग) अनुनासिकता - अनुस्वार (ँ) और अनुनासिक (ँ) में मूल अंतर यही है कि अनुनासिक स्वर का गुण है और अनुस्वार अनुनासिक्य व्यंजन का एक रूप है। अनुनासिक स्वर के लिए चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग होता है: जैसे-आँगन, उँगली, काँटा, पाँव। यदि शिरोरेखा के ऊपर मात्रा हो तो चंद्रबिंदु (ँ) के स्थान पर बिंदी (ँ) का प्रयोग होता है:

स्वर। अतः यह शब्द के मध्य और अंत में ही आ सकता है, आदि में नहीं। शब्द के मध्य में अनुस्वार अपने परवर्ती व्यंजन के वर्ग के नासिक्य व्यंजन अर्थात् पंचमाक्षर का प्रतिनिधित्व करता है; जैसे-

- | | |
|---|----|
| 1. क वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | ङ् |
| 2. च वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | ञ् |
| 3. ट वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | ण् |
| 4. त वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | न् |
| 5. प वर्ग के प्रथम चार वर्णों के पूर्व आने पर | म् |

उक्त सभी स्थितियों में नासिक्य व्यंजन अर्थात् पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (¨) का प्रयोग होता है न कि पंचमाक्षर का: जैसे -

गंगा, पंकज (गङ्गा, पङ्कज)

मंच, कुंज (मञ्च, कुञ्ज)

कुंठा, खंड (कुण्ठा, खण्ड)

दंत, बंद (दन्त, बन्द)

चंपक, अंब (चम्पक, अम्ब)

- जब कोई पंचमाक्षर दूसरे पंचमाक्षर के साथ संयुक्त होता है तो पहला पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में नहीं बदलता अपितु पंचमाक्षर रूप में ही संयुक्त होता है: जैसे - वाङ्मय, अन्न, सम्मेलन, मृण्मय, उन्मुख, अक्षुण्ण।
- यदि पंचमाक्षर य, व, ह के पहले आता है तो वहाँ वही पंचमाक्षर लिखा जाता है, अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता है: जैसे - पुण्य, अन्य, समन्वय, कन्हैया, तुम्हारा।
- श, ष, स, ह के पूर्व केवल अनुस्वार का ही प्रयोग होता है, पंचमाक्षर का नहीं: जैसे- अंश, वंश, हंस, कंस, संहार आदि।
- सम् उपसर्ग के बाद जो शब्द अंतःस्थ या ऊष्म वर्णों से प्रारंभ होते हैं तो 'म्' निश्चित रूप से अनुस्वार हो जाता है: जैसे - सम् + यंत्र = संयंत्र, सम् + रचना = संरचना, सम् + लाप = संलाप, सम् + वाद = संवाद।

(ग) अनुनासिकता - अनुस्वार (¨) और अनुनासिक (¨) में मूल अंतर यही है कि अनुनासिक स्वर का गुण है और अनुस्वार अनुनासिक्य व्यंजन का एक रूप है। अनुनासिक स्वर के लिए चंद्रबिंदु (¨) का प्रयोग होता है: जैसे-आँगन, उँगली, काँटा, पाँव। यदि शिरोरेखा के ऊपर मात्रा हो तो चंद्रबिंदु (¨) के स्थान पर बिंदी (¨) का प्रयोग होता है:

जैसे - मैं कौंधना, चींटी, में, हैं। अतः शिरोरेखा पर मात्रा के ऊपर लगी यह बिंदी (`) अनुनासिकता की सूचक है अनुस्वार की नहीं।

(घ) ईकारांत और ऊकारांत शब्दों के बहुवचन रूप बनाते समय 'ई' और 'ऊ' क्रमशः 'इ' और 'उ' बन जाते हैं: जैसे-नदी-नदियाँ, बहू-बहुएँ।

(ङ) संस्कृत से हिंदी में आए जिन शब्दों के अंतिम वर्ण पर हलंत का चिह्न लगता है, वे प्रायः हलंत के बिना लिखे जाने लगे हैं; जैसे-विद्वान्, महान्, श्रीमान्, भगवान्, हनुमान्। किंतु कुछ शब्दों में हलंत का प्रचलन अब भी है; जैसे-सम्यक्।

वाक्य स्तर पर

वाक्य स्तर पर वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ से बचने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना अपेक्षित है-

- (i) लिखते समय शब्दों के बीच की दूरी का ध्यान न रखने से कभी-कभी वाक्य का अर्थ ही बदल जाता है: जैसे - 'जल सा लग रहा है' वाक्य में जल सा को मिलाकर लिखने पर 'जलसा' शब्द बनेगा जिससे दूसरे ही अर्थ का बोध होगा।
- (ii) वाक्य लेखन में समुचित विरामचिह्नों का प्रयोग अपेक्षित है। 'तुम आ गए' वाक्य के बाद पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक -कोई भी विरामचिह्न लगाया जा सकता है परंतु जब तक वक्ता के आशय के अनुसार विरामचिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता तब तक अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

वर्तनी की सामान्य अशुद्धियाँ

(क) अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजनों की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कनिष्ठ	कनिष्ठ	भूक	भूख
झूट	झूठ	धोका	धोखा
मिष्टान्न	मिष्ठान्न	अभीष्ट	अभीष्ट
सीधा-साधा	सीधा-सादा	धंदा	धंधा
दक्कन	दक्खन	हिंदुस्थान	हिंदुस्तान

(ख) श ष स के प्रयोग की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अभिषेक	अभिषेक	कलस	कलश
विशेश	विशेष	नमश्कार	नमस्कार
प्रशाद	प्रसाद	प्रशंशा, प्रसंशा	प्रशंसा
शाशन	शासन	नास	नाश
मनुश्य	मनुष्य	दुश्कर	दुष्कर
विषद	विशद	विकाश	विकास

(ग) व ब के अभेद के कारण अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बनस्पति	वनस्पति	विक्री	बिक्री
बाणी	वाणी	पूर्ब	पूर्व
वाह्य	बाह्य	व्यापार	व्यापार
वाण	बाण	ब्रत	व्रत

(घ) य ज के अभेद के कारण अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अजोध्या	अयोध्या	जमराज	यमराज
जजमान	यजमान	योग्य	योग्य

(ङ) छ क्ष के अशुद्ध उच्चारण के कारण अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
छत्रिय	क्षत्रिय	नच्छत्र	नक्षत्र
छमा	क्षमा	लच्छन	लक्षण

(च) ण न ङ की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कल्यान	कल्याण	प्रनाम	प्रणाम
कारन	कारण	रणभूमि	रणभूमि
टिप्पड़ी	टिप्पणी	चरन	चरण
पुन्य	पुण्य	वेड़ी	वेणी

(छ) व्यंजन-गुच्छों में अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उद्देश्य, उद्देश	उद्देश्य	मध्यान्ह	मध्याह्न
उज्ज्वल, उज्जवल	उज्ज्वल	महात्म	माहात्म्य
उपलक्ष	उपलक्ष्य	द्वंद/द्वंद	द्वंद्व
कृप्या	कृपया	शुद्ध	शुद्ध
वांगमय	वाङ्मय	परसिद्ध	प्रसिद्ध
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	ब्राम्हण	ब्राह्मण
सामर्थ	सामर्थ्य	चिन्ह	चिह्न
सटेशन	स्टेशन	सकूल	स्कूल

(ज) स्वर और मात्राओं की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुग्रहीत	अनुगृहीत	दृष्टव्य	द्रष्टव्य
मिग्र	मृग	दृष्टा	द्रष्टा
पैत्रिक	पैतृक	चहरदीवारी	चहारदीवारी
रिण	ऋण	तत्कालिक	तात्कालिक
अहार	आहार	अहिल्या	अहल्या
अनुसूया	अनसूया	पत्ति	पत्नी
क्षत्रीय	क्षत्रिय	पूर्ती	पूर्ति
ओद्यौगिक	औद्योगिक	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
अलौकिक	अलौकिक	बिमारी	बीमारी
परिणती	परिणति	महिलाएं	महिलाएँ
व्यावहारिक	व्यावहारिक	गुरु	गुरु
वधु	वधू	मधू	मधु
दवाईयां	दवाईयाँ	त्यौहार	त्योहार

(झ) अनुस्वार और अनुनासिक की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
हंसमुख	हँसमुख	अँधा	अंधा
संवारना	संवारना	अंधेरा	अँधेरा

अशुद्ध

शुद्ध

अशुद्ध

शुद्ध

आंख

आँख

ऊंट

ऊँट

दांत

दाँत

साँसारिक

सांसारिक

सन्यासी

संन्यासी

गंवार

गँवार

(ज) पंचमाक्षर के प्रयोग की अशुद्धियाँ

अशुद्ध

शुद्ध

अशुद्ध

शुद्ध

दन्ड

दंड

भन्डार

भंडार

सम्बत्

संवत्

सम्वाद

संवाद

कनान

कंगन

पन्डित

पंडित

(ट) अनावश्यक स्वर या व्यंजन जोड़ने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध

शुद्ध

अशुद्ध

शुद्ध

स्नाप

शाप

अस्थिर

स्थिर

सहस्त्र

सहस्त्र

इस्टेशन

स्टेशन

सौहाद्र/सौहार्द

सौहार्द

इस्थिति

स्थिति

(ठ) अक्षर लोप की अशुद्धियाँ

अशुद्ध

शुद्ध

अशुद्ध

शुद्ध

अध्यन

अध्ययन

निश्चिता

निश्चितता

परिछेद

परिच्छेद

विछिन्न

विच्छिन्न

(ड) रेफ की अशुद्धियाँ

अशुद्ध

शुद्ध

अशुद्ध

शुद्ध

आशीर्वाद

आशीर्वाद

कर्मधार्य

कर्मधारय

सार्मथ्य

सामर्थ्य

तीर्व

तीव्र

(ढ) संधि-नियमों के उल्लंघन की अशुद्धियाँ

अशुद्ध

शुद्ध

अशुद्ध

शुद्ध

अनाधिकार

अनधिकार

जगतगुरू

जगद्गुरू

दुरावस्था

दुरवस्था

देविन्दर

देवेंद्र

उपरोक्त

उपर्युक्त

दुशील

दुःशील, दुश्शील

सम्मार्ग

सन्मार्ग

निश्वास

निःश्वास

सन्मुख	सम्मुख	उतपात	उत्पात
मनोस्थिति	मनःस्थिति	महिन्दर	महेंद्र

(ण)यी-ई, ये-ए आदि के मानक रूप

अमानक	मानक	अमानक	मानक
हुयी	हुई	गयी	गई
जायें	जाएँ	जाय/जाये	जाए
चाहिये	चाहिए	देखिये	देखिए
स्थाई	स्थायी	बताइये	बताइए
उत्तरदाई	उत्तरदायी	वस्तुयें	वस्तुएँ

प्रश्न-अभ्यास

- वर्तनी से क्या तात्पर्य है ?
- वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ कितने प्रकार की हो सकती हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
- अनुस्वार और अनुनासिक में क्या अंतर है ? प्रत्येक के पाँच-पाँच उदाहरण लिखिए।
- क्ष, त्र, ज्ञ, संयुक्ताक्षर किन वर्णों के योग से निर्मित हैं ?
- निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध वर्तनी वाले शब्दों को छाँटिए-
गरिष्ठ, मिष्ठान्न, वाणी, ब्राम्हण, जजमान, स्तुति, अहिल्या, स्वास्थ, चिन्ह, उपलक्ष, संन्यासी, उज्ज्वल, गुंडा, धनाड्य, क्षत्रिय, छेत्र।

